RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-07
July-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

बदलते परिदृश्य में भारत –चीन संबंधों के आर्थिक एवं रणनीतिक आयाम

डॉ. संजय कुमार शर्मा
व्याख्याता राजनीति विज्ञान

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 July 2019

Keywords
प्रतिबद्धिता, प्रतिस्पर्द्धात्मक, डॉलर कूटनीति, चेक बुक कूटनीति, टूल बॉक्स, रणनीतिक संस्कृति, महत्वपूर्ण उपकरण

***Corresponding Author**
Email: sanjayyy0786[at]gmail.com

ABSTRACT

चीन की कूटनीतिक मानसिकता समझना समकालीन भारतीय विदेश नीति के अर्थवेद को फिर से साकार देने के लिए महत्वपूर्ण बिन्दु हो गया है। हाल ही नई दिल्ली में **''चाईना इन दा 21 सेंचुरी व्हाट इंडिया नीड्स टु नो अबाउट चाईनाज वर्ल्ड व्यू'' (21वीं सदी में चीन–भारत को चीन के वैश्विक दृष्टिकोण के बारे में कितने ज्ञान की जरूरत)** विषय पर **ग्लोबल इंडिया फाउंडेशन** के दूसरे वार्षिक **सुब्रह्यणियम् स्मृति व्याख्यान** में इस पहलू के बारे में विस्तार से चर्चा हमारे पूर्व विदेश **सचिव श्याम शरण** द्वारा की गई। शरण ने इस बैठक में कहा कि **''भारत को चीन की रणनीतिक मानसिकता के बारे में वृहतर सुविज्ञता की जरूरत है,वे तीखे थे जब उन्होंने कहा कि कपट चीनी रणनीतिक संस्कृति का एक आंतरिक अवयव हैं। जरूरत इस बात की है कि हमारे रणनीतिकार और कूटनीतिज्ञ चीनी रणनीतिक टूल बॉक्स में मौजूद इस महत्वपूर्ण उपकरण को समझें और इससे प्रभावकारी ढंग से निपटना सीखें।''**

भारत चीन का दक्षिण एशिया में एकमात्र प्रतिस्पर्धी हैं। भारत को सन् 1947 में स्वतंत्रता मिली और 1949 में चीन में साम्यवादी क्रांति होकर एक नये युग का प्रारम्भ हुआ। भारतीय स्वतंत्रता के बाद 1960 तक भारत व चीन के बीच बहुत ही अच्छे रिश्ते थे। लेकिन चीन का विस्तारवादी कुटिल दांव भारत के ध्यान में आने से पहले ही चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया और उसी दौरान 37555 वर्ग किमी. का भारतीय क्षेत्र चीन ने अपने कब्जे में ले लिया।[1]

स्वतंत्रता के बाद से ही भारत व चीन दोनों राष्ट्रों ने कई राहें तय की हैं। सन् 1962 के युद्ध के परिणाम में **''कड़वी प्रतिबद्धिता''** और **''प्रतिस्पर्द्धात्मक मैत्री''** के स्वभाव वाले वर्तमान दौर तक आई है। दोनों देशों के बीच संबंध इतने जटिल हैं कि उन्हें किसी भी एक विश्लेषणात्मक रूपरेखा में नहीं समझाया जा सकता है। शीतयुद्ध के उपरान्त विश्व व्यवस्था में चीन और भारत व्यापार असन्तुलन, पर्यावरणीय क्षरण, ऊर्जा सुरक्षा और एशिया व अफ्रीका के तीसरी दुनिया के देशों के अधिकारों की हिमायत करने वाले तथा पश्चिमी देशों की जालसाजी का विरोध करने वाले मानवाधिकारों के संरक्षण जैसे समस्या के क्षेत्रों में एक साझा वैश्विक मंच पर कई बार एक साथ आये। यद्यपि 1949 ई. में चीन में साम्यवादी शासन की स्थापना तथा भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् दोनों देशों के मध्य वैचारिक मतभेद उत्पन्न होने लगें, किन्तु शांति एवं मैत्री के सूत्र में बंधे रहे।[2]

दोनों देश ताकत और प्रभाव के अपने संबंधित क्षेत्र को तराश कर बहुध्रुवीय विश्व में प्रमुख ताकतों की तरह स्वतंत्र रूप से कार्य करने के लिए उत्सुक है। हालांकि, प्रतिस्पर्धी विश्व व्यवस्था में दोनों देशों की ताकत की महत्वाकांक्षाओं ने उन्हें खुले तौर और गुप्त रूप से कठोर शत्रु भी बना दिया है। भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय संबंधों के विभिन्न पहलुओं की विस्तारपूर्ण समझ के लिए, उनके बीच प्रतिविरोध के प्रमुख मुद्दों का विश्लेषण करना और साथ ही हित के उभरते क्षेत्रों पर विचार करना अनिवार्य है।[3] आज अनेक देश चीन भारत संबंधों को शक्ति संतुलन अथवा हितों में टकराव की पुरानी प्रवृत्तियों तथा एशिया को दो देशों के बीच प्रतियोगिता के मंच के रूप में देख रहे हैं परन्तु एशिया में शांति और समृद्धि तथा इस क्षेत्र के राष्ट्रों के बीच अंर्तसम्बन्धों की तीव्र तलाश के दौर में ऐसे सिद्धान्त पुराने पड़ चुके है। वास्तव में एशियाई और वैश्विक शक्तियों के रूप में भारत और चीन का एक साथ उत्थान दोनों को परस्पर हितों व आकांक्षाओं के प्रति संवेदनशील होने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। बड़ी शक्तियों के बीच वैश्विक सहयोग की मौजूदा संरचना की भी यही मांग है कि दोनों देश सौहार्दपूर्ण राष्ट्रों के बीच उचित स्थान पाने के लिए एक दूसरे का समर्थन करे।[4]

चीन के साथ भारत के संबंधों के बारे में विदेश सचिव जयशंकर ने कहा है कि 1945 के बाद से दोनों देशों के बीच सम्बन्धों में काफी प्रगति हुई हैं। हम चीन को यह समझाने की कोशिश कर रहे है कि भारत के उदय से चीन को कोई नुकसान नहीं होने वाला है। ठीक उसी तरह से जैसे चीन के उदय से भारत को नुकसान नहीं होना है। संयुक्त राष्ट्र में आतंकी मसूद अजहर पर पाबंदी, एनएसजी में भारत की सदस्यता समेत कई मुद्दों पर भारत व चीन के सम्बन्धों में तल्खी देखने को मिली है।[5]

❖ भारत–चीन सम्बन्धों कपितय आर्थिक आयाम

कूटनीति अर्न्तराष्ट्रीय संबंधों का संवाद द्वारा प्रबन्धन है, यह एक ऐसी पद्धति हैं जिसके द्वारा ये संबंध राजदूतों और राजनयिकों के माध्यम से समायोजित और प्रतिबंधित किये जाते हैं। किसी भी देश की कूटनीति उस दुनिया द्वारा प्रतिबद्ध होती है, जिससे वह अपना अस्तित्व रखता है। जब हम

RRIJM 2015, All Rights Reserved

कूटनीतिक तौर तरीके अपनाने का प्रयास करते है तो उसके कई तरीके होते हैं। आर्थिक कूटनीति भी उनमें से एक महत्वपूर्ण पद्धति है। इसमें सभी आर्थिक गतिविधियाँ जिसमें आयात, निर्यात, निवेश, सहायता, ऋण, मुक्त व्यापार समझौते आदि शामिल हैं। आर्थिक कूटनीति को परम्परागत रूप से निर्णय निर्माण, नीति निर्माण और राष्ट्र के व्यापार हित की पेरोकारी के रूप में परिभाषित किया जाता है। आज हम **21वीं सदी** में जी रहे है एवं आज आर्थिक कूटनीति पर जोर के महत्व को पूरी दुनिया मानती है।[6]

आर्थिक कूटनीति अर्न्तराष्ट्रीय राजनीति की नवीन प्रवृत्ति नहीं हैं। यदि इतिहास में देखा जाये तो इसकी झलक हमें 19वीं सदी में यूरोपीय देशों की व्यापारिक कूटनीति में दिखती हैं या **डालर कूटनीति** या अमेरिका में बीती सदी की शुरूआत में **चेकबुक कुटनीति** में देखी जा सकती हैं। इस तथ्य को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता कि आर्थिक कूटनीति राजनीतिक कूटनीति का एक हथियार है। भारत की आर्थिक कूटनीति को सफलता खासतौर से 1973 में पहली बार तेल संकट के बाद से मिलनी शुरू हो गई थी। किन्तु राजनीतिक और सामरिक उद्देश्यों के साथ आर्थिक कूटनीति में भी सफलता के लिए अभी भारत को बहुत दूर तक जाना है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमें अपने नजरिये में आधारभूत परिवर्तन करना होगा।[7] वैश्विक अर्थव्यवस्था ने भारत को एक बहुत चुनौतीपूर्ण स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है, लेकिन उसके साथ एक बहुत आशापूर्ण स्थिति भी है। पश्चिमी दुनिया की स्थिति ने एक बहुत कठिन स्थिति सामने लाकर खड़ी कर दी है, जहाँ सभी प्रयासों के बाद भी भारत के निर्यात में गिरावट आ रही है। दूसरी तरफ तेल की कीमतें रिकार्ड स्तर पर नीचे चली गई हैं। इसके साथ ही चीन की विकास दर मे भी गिरावट दर्ज की गई हैं। चीन की विकास दर में ये गिरावट भारत के लिए एक स्वागत योग्य स्थिति है। जहाँ तक वैश्विक व्यापार की बात है तो चीन भारत के सामने एक बड़ी चुनौती है। दोनों देश एक ही तरह के सामान बनाने के चैम्पियन है। चूंकि चीनी सामान भारत से सस्ते है, इसलिए चीन दुनिया के बाजारों को अपने सस्ते सामानों से पाटने में सफल रहा है। चीन की स्वर्ण जयंती के अवसर पर अपने संदेश में भूतपूर्व राष्ट्रपति **के. आर. नारायणन** ने कहा था कि **"भारत और चीन दोनों का यह उत्तरदायित्व है कि वे पारस्परिक सहयोग करे ताकि नई शताब्दी में दोनों देशों की जनता की समृद्धि को सुनिश्चित किया जा सके तथा शांति, स्थायित्व एवं न्याय के लिए योगदान किया जा सके।[8]"**

ग्लोबल ट्रेडर्स, 2005 नामक इस रिपोर्ट में कहा गया है कि 17 साल बाद चीन दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और अग्रणी सैन्य शक्ति होगा। भारत भी आर्थिक विकास की राह पर तेजी से बढ़ेगा। भारत चीन सम्बन्ध आर्थिक व व्यापारिक क्षेत्र में विशेष रूप से आगे बढ़ रहे हैं। दोनों देशों का द्विपक्षीय व्यापार 100 अरब डॉलर तक पहुँच चुका है, चीन अमेरिका को पछाड़कर भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बन चुका है। आर्थिक क्षेत्र में बढ़ते सहयोग के बावजूद कुछ कारणों से दोनों के आर्थिक सहयोग में कई बाधाएँ व चुनौतियाँ हैं।[9]

सन् 1963 से 1971 तक भारत तथा चीन के सम्बन्ध बर्फ के समान ठण्डे रहे। फिर सम्बन्धों को सामान्य बनाने के प्रयत्न आरम्भ हुए। आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में सम्बन्धों का विकास करने की प्रक्रिया को आरम्भ किया गया। किन्तु सीमा विवाद को हल कर पाने में असमर्थता ने भारत–चीन सम्बन्धों को सीमित रखा। दिसम्बर 1988 में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने चीन की यात्रा की। दिसम्बर 1991 में चीन के प्रधानमंत्री भारत आये, फिर मई 1992 में भारत के राष्ट्रपति ने चीन का सरकारी दौरा किया। 30 वर्षों के बाद सीमा व्यापार आरम्भ करने का समझौता हुआ। ये सभी तथ्य भारत–चीन सम्बन्धों के विकास के द्योतक हैं, परन्तु सीमा विवाद की निरन्तर उपस्थिति तथा विद्यमान मतभेद भारत चीन सम्बन्धों को सीमित बनाए हुए है। वर्तमान में भारत–चीन आर्थिक सम्बन्ध सीमा विवादों को पृष्ठभूमि में करते हुए तेजी से बढ़ रहे हैं।[10]

वर्तमान परिदृश्य में भारत एवं चीन

चीन अपनी बढ़ती सैन्य शक्ति और राजनीतिक प्रभुत्व की धौंस अपने पड़ोसियों पर दिखाता रहता है, लेकिन उसकी इस धौंस का दूसरे पड़ोसियों की अपेक्षा भारत पर अधिक प्रभाव पड़ता हैं। चीन की शक्ति आजमाने वाली नीति से दोनों देशों के मध्य पहले से ही तनाव में चल रहे द्विपक्षीय सम्बन्धों पर और भी बुरा प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। हाल ही के वर्षों में नई दिल्ली की यात्रा कर आने वाले प्रत्येक चीनी नेताओं ने लाभ उठाने का कोई अवसर हाथ से जाने नहीं दिया और भीतर छिपे उद्देश्यों से यह साबित किया कि वह भारत के विरूद्ध हैं। चीन अपनी आर्थिक ताकत के इस्तेमाल से भारत को हरसंभव अन्तर्राष्ट्रीय मंच से हटाने का प्रयास करता है। पिछले दशक में यह प्रतिद्वन्द्विता संयुक्त राष्ट्र संघ, सुरक्षा परिषद्, पूर्व एशिया सम्मेलन, एशिया यूरोप मिटिंग, एपेक, न्यूक्लियर सप्लायर ग्रुप तथा एशिया विकास बैंक में देखी जा सकती है।[11]

भारत की निरन्तर सुदृढ़ हो रही आर्थिक शक्ति, सैन्य सामर्थ्य एवं वैश्विक स्तर पर बढ़ती कूटनीतिक गतिविधियाँ चीन के सुरक्षा प्रतिष्ठान हेतु सर्वाधिक विश्लेषण का बिन्दु हैं। यही कारण हैं कि वे भारत के विस्तृत रहे सामरिक, आर्थिक व राजनीतिक क्षितिज को दक्षिण एशिया तक सीमित करने हेतु निरन्तर प्रयत्नशील हैं। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु चीन ने भारत के परम्परागत विरोधी पाकिस्तान को अपना मोहरा बनाने की हरसम्भव कोशिश की हैं। सन् 1963 में पाक अधिकृत कश्मीर के राजनीतिक महत्व के सन्दर्भ में एक सीमा समझौता तथा

RRIJM 2015, All Rights Reserved

कालान्तर में बांग्ला–मुक्ति संघर्ष में चीन–पाक–अमेरिका धुरी की स्थापना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।[12]

वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में यह सुनिश्चित हो गया हैं कि भारत व चीन वर्तमान मौजुद समस्याओं के बावजूद, एक–दूसरे के साथ लगे रहे है। शीत युद्ध के बाद उभरी नई विश्व अर्थव्यवस्था में भारत और चीन खुद को हितों की समानता के साथ पाते हैं। दोनों देशों ने महसूस किया है कि उनका आर्थिक और तकनीकी कौशल नई अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में उनके अस्तित्व को निर्धारित करेगा। इसलिए भारत और चीन दोनों ही अपने द्विपक्षीय आर्थिक सम्बन्धों को मजबूत करना चाहते हैं, साथ ही बहुपक्षीय व्यापार व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाना चाहते हैं और द्विपक्षीय आर्थिक बन्धनों को मजबूत करना चाहते हैं। भारत और चीन द्विपक्षीय व्यापार जो 2000 में 292 करोड़ अमेरिकी डॉलर था, सन् 2016 में चीन को भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बनाते हुए 65 अरब अमेरिकी डॉलर पर पहुँच गया।[13]

हालांकि भारत और चीन के बीच तेज आर्थिक पारस्परिक क्रिया के बावजूद खामियाँ द्विपक्षीय सम्बन्धों का हिस्सा बनी हुई हैं। भारत में चीन के राजदूत **झैंग यैन** के शब्दों में एशिया की दो महान ताकतों के बीच **''द्विपक्षीय संबंध बहुत नाजुक बने हुए हैं जिन्हें तोड़ना जितना आसान है जोड़ना उतना ही मुश्किल।**''

भारतीय प्रधानमंत्री **नरेन्द्र मोदी** ने भी नई दिल्ली में **रायसीना डायलॉग** सम्मेलन के उद्घाटन भाषण में साफ कह दिया था कि भारत अकेले शांति के राह पर नहीं चल सकता। पाकिस्तान और चीन की ओर इशारा करते हुए कहा कि पड़ोसी देशों को भी इसमें अपनी भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। पाकिस्तान के नियोजन एवं विकास मंत्री **अहसान इकबाल** ने **''वायॅस ऑफ अमेरीका''** को दिए एक इंटरव्यू में कहा**''ऐसा लग रहा है कि भारत, पाकिस्तान व चीन के बीच संबंध बेहतर हो रहे है।**''अपने इस इंटरव्यू में उन्होंने यह भी कहा कि भारत को **चीन–पाक आर्थिक कॉरिडोर** को संदेह की नजर से देखना छोड़ना होगा। इसे भारत को अपने अवसर के रूप में देखना चाहिए।[14]

करेंसी की खरीद क्षमता के लिहाज से भारत की अर्थव्यवस्था 2050 तक अमेरिका से बड़ी हो जाएगी, चीन के बाद भारत की अर्थव्यवस्था दूसरे नम्बर पर होगी। अभी यह चीन व अमेरिका के बाद तीसरे स्थान पर हैं। अन्तर्राष्ट्रीय कंसल्टेंसी फर्म **''प्राईसवाटर हाउस क्रूपर्स''** ने एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी है। इसमें कहा है कि आने वाले तीन दशक विकासशील देशों के होंगें। टॉप 7 सबसे बड़ी इकोनॉमी में 5 विकासशील देशों की होगी। दुनिया की 32 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं को रैकिंग दी गई हैं। ग्लोबल जीडीपी में इनका हिस्सा 85 प्रतिशत हैं। प्रति व्यक्ति जीडीपी में विकसित देश 2050 में भी आगे रहेंगे। भारत 32 देशों में 28 वें नम्बर पर होगा। 2016 में अमेरिका की प्रतिव्यक्ति जीडीपी चीन की तुलना में 4 गुना और भारत का 9 गुना थी। 2050 में अमेरिका की प्रतिव्यक्ति जीडीपी चीन का दोगुना और भारत का 3 गुना होगी। अभी भारत की प्रतिव्यक्ति जीडीपी 7000 अमेरिकी डॉलर के आसपास हैं। चीन की 15,000 और अमेरिका की 60,000 डॉलर हैं। 2050 में अमेरिका की करीब 90,000 डॉलर और भारत की 30,000 और चीन की करीब 45,000 डॉलर होगी।[15]

निष्कर्ष

भारत व चीन के मध्य विवाद के अनेक कारण अथवा मुद्दे रहे हैं। इन कारणों ने समय–समय पर कभी एकल रूप में तो कभी सामुहिक रूप में भारत–चीन सम्बन्धों को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। सन् 1990 के दशक में पाकिस्तान को चीन के द्वारा दी जा रही नाभिकीय सहायता तथा भारत के परमाणु कार्यक्रम पर रोक लगाने की चीन की कोशिशों ने भारत–चीन सम्बधों में शंका, अविश्वास को जन्म दिया। **21वीं सदी** में भारत–चीन सम्बन्धों पर एशिया की राजनीति में वर्चस्व को लेकर दोनों देशों में प्रतिद्वन्द्वता, आर्थिक व व्यापारिक क्षेत्र में प्रतिस्पर्द्धा, भारत की सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता के दावे के प्रति चीन का उपेक्षा भाव आदि मुद्दे प्रभावी हो गये हैं किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि भारत–चीन के मध्य सीमा विवाद, तिब्बत समस्या अथवा चीन–पाक मैत्री जैसे परम्परागत विवाद समाप्त हो गये हैं। इतना अवश्य है कि पिछले एक दशक में भारत–चीन सम्बन्धों में सामान्यीकरण की प्रक्रिया के कारण इन परम्परागत विवादों की उग्रता कुछ कम हो गयी थी, किन्तु सन् 2015 में सीमा विवाद तथा तिब्बत समस्या ने एक बार पुनः भारत–चीन सम्बन्धों के भविष्य को अनिश्चित बना दिया है।

सन्दर्भ सूची

1. सिंह. रामविजय, ''भारत–चीन संबंधः एक संवाद' राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2015, पृ.7
2. पंत. पुष्पेश, ''अर्न्तराष्ट्रीय सम्बन्ध'' मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 2001, पृं. 512
3. बिस्वाल. तपन, ''अर्न्तराष्ट्रीय संबंध'' मैकमिलन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012, पृ.110
4. सिंह. रामविजय, पूर्वोक्त, पृ.121
5. राजस्थान पत्रिका,''19 जनवरी, 2017' रायसीना डॉयलाग–सचिव–एस. जयशंकर
6. चक्रवती. मानस, ''आर्थिक कूटनीति राजनीतिक नीति : विदेश नीति का एक टूल'' वर्ल्ड फोकस, जुलाई, 2016, पृ.5
7. चक्रवर्ती. मानस, उर्पयुक्त, जुलाई, 2016, पृ.6

RRIJM 2015, All Rights Reserved

8. खन्ना. वी. एम. अरोड़ा लिपाक्षी, ''भारत की विदेश नीति, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. 2006 पृ.175
9. सहयोगी. अरूण. कुमार, ''भारत–चीन में वैश्विक विस्तार की कवायद'' प्रतियोगिता दर्पण, जून 2009, पृ.13
10. धई.यू.आर., ''अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति–सिद्धान्त एवं व्यवहार,'' न्यू एकेडमिक पब्लिशिंग कम्पनी'', जालन्धर, 2002, पृ.330–331
11. माधव. राम, ''असहज पड़ौसी'' प्रभात पेपरबैग्स, नई दिल्ली, 2015, पृ.123
12. द्विवेदी. कुमार. अशोक, ''भारत–चीन सम्बन्धों की गति चुनौतियाँ एवं अक्सर,'' राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ.37
13. अभिनंदन. नेताजी, ''चीन के साथ भारत के संबंधः बाधाएँ एवं चुनौतियाँ,'' वर्ल्ड फोकस, सितम्बर 2013, पृ.33
14. सिंह. स्वर्ण, ''भारत पाक बर्फ पिघलने के आसार'' राजस्थान पत्रिका, 8 फरवरी, 2017
15. दैनिक भास्कर ''8 फरवरी 2017,''

RRIJM 2015, All Rights Reserved